विश्व में बाघों की 9 प्रजाति मिलती थी।

मलायान बाघ

दक्षिण चीनी बाघ

सुमात्रा बाघ

साइबेरियन / अमुर बाघ

इंडो- चीन बाघ

भारतीय बाघ

3 बाघ प्रजातियां आज विलुप्त हो चुकी है।

बाली बाघ

कैस्पियन बाघ

जावा बाघ

एक आम नागरिक के तौर पर आप कैसे बाघ संरक्षण में भागीदार बन सकते?

१. किसी भी तरह के वन्यजीव उत्पादों का प्रयोग ना करे।
२. किसी भी वन्यजीव को परेशान ना करे उनसे एक निश्चित दूरी बनाए।
३. वन्यजीव क्षेत्र में अवैध प्रवेश ना करे, आग ना लगाए और कचरा ना डाले।
४. बेजुबान वन्यजीवो की जुबान बने।
५. सरकारी संस्थाएं और गैर सरकारी संस्थाएं जो वन्यजीव संरक्षण में कार्यरत है उनसे जुड़े और उन्हें समर्थन दे।

मप्र वन विभाग

Urban Tiger Conservation Project
(www.urbantigers.org)

बाघों के बारे में रोचक तथ्य

भोपाल के शहरी बाघ

विगत कुछ वर्षों में भोपाल शहर बहुत विस्तृत हुआ है और आज शहरी सीमा विंध्य पर्वत श्रंखला एवं उसके आसपास के फैले क्षेत्रों तक पहुंच गई है जो कभी शहर से काफी दूर थे । विंध्य पर्वत के कई हिस्से शहर से जुड़े हुए है और वे बाघ और तेंदुआ सहित अन्य वन्य जीवो को आश्रय प्रदान करता है। तेजी से होते शहरी विस्तार के बावजूद इन जंगली जानवरों ने इस परिवेश में रहना और जीना सीख लिया।

२०१९-२०२९ के दौरान शहर के दक्षिणी क्षेत्र से शहर के बाहर २० कि मी क्षेत्र में फील्ड सर्वे किया गया और पाया गया शहर के दक्षिणी क्षेत्र कलियासोत - केरवा से लेकर शहर के बाहर भोपाल, सीहोर, रायसेन के प्रादेशिक वनप्रभाग और रातापानी वन्यजीव अभयारण्य में बाघों की उपस्थिति दर्ज की गई। जहां एक तरफ शहर में मानव जनसंख्या लगभग ५००० व्यक्ति / कि मी है वहीं इन बाहरी इलाकों में यही घनत्व २०० व्यक्ति/ कि मी है। सर्वे में हमने पाया कि भोपाल और आस पास के क्षेत्र सिर्फ बाघों के मूवमेंट क्षेत्र/ कॉरिडोर नहीं है अपितु स्थापित बाघ रहवास क्षेत्र है जहां नर, मादा, अप- वयस्क और शावक, पास की शहरीय जनसंख्या से बिना किसी संघर्ष के रहा रहे है। इन बाघों को इनके रहवास में कैमरा ट्रैप की मदद से फोटो ली गई है। भोपाल शहर के भीतर भी हमने बाघों कि स्थिति दर्ज की है।

Concept & Design:
DP Srivastava

भारत में बाघ संरक्षण

भारत में बाघ संरक्षण 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर से 9 टाइगर रिजर्व से शुरू हुआ। ९ टाइगर रिजर्व जिनसे प्रोजेक्ट टाइगर शुरु हुआ वो है जिम कॉर्बेट, मानस, रणथंभौर, सिमलीपाल, बांदीपुर, पालामऊ, सुंदरवन, मेलघाट और कान्हा।

आज पूरे देश में 50+ टाइगर रिजर्व है। इसके अलावा बाघ संरक्षित क्षेत्रों से बाहर मानव - बहुल परिक्षेत्रों में भी संरक्षित है।

पूरे विश्व का कुल 70% बाघ भारत में पाए जाते है। 2018 की गणना के अनुसार भारत में 2967 बाघ है। पूरे भारत में मध्य प्रदेश में सर्वाधिक बाघ पाए जाते है (526 बाघ) इसलिए इसे "बाघ राज्य" के नाम से जाना जाता है।

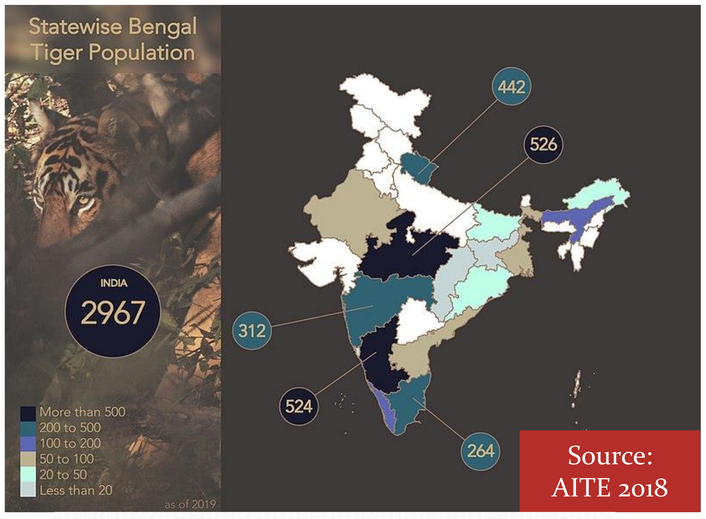

Source: AITE 2018

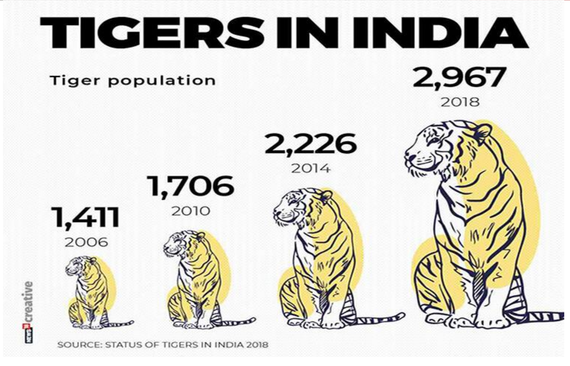

वन्यप्राणी अभ्यारण्य

1. बगदरा
2. बोरी
3. गांधी सागर
4. गंगउ
5. घाटीगांव
6. केन घड़ियाल
7. खिवनी
8. कुनो पालपुर
9. नरसिंहगढ़
10. चंबल
11. नौरादेही
12. ओरछा
13. पचमढ़ी
14. पनपता
15. पेंच
16. फेन
17. रालामंडल
18. रातापानी
19. सैलाना
20. सरदारपुर
21. संजय(डुबरी)
22. सिंघोरी
23. सोन घड़ियाल
24. वीरांगना दुर्गावती

टाइगर रिजर्व

1. कान्हा
2. पेंच
3. सतपुडा
4. बांधवगढ़
5. संजय डुबरी
6. पन्ना

राष्ट्रीय उद्यान

1. बांधवगढ़
2. कान्हा
3. पन्ना
4. पेंच
5. संजय
6. सतपुड़ा
7. वन विहार
8. डायनोसोर जीवाश्म
9. माधव

बाघों के बारे में रोचक तथ्य

- भारत में बाघ हिमालय के बर्फीले क्षेत्रों से ले कर राजस्थान के शुष्क क्षेत्र, पश्चिमी घाट के सदाबहार जंगलों, और पश्चिम बंगाल के तटीय क्षेत्रों में पाए जाते है।
- बाघों के कान के पीछे सफेद धब्बे होते है जो भ्रमित आंखो का काम करते है।
- बाघ की दहाड़ 1-2 किलो मीटर से भी सुनी जा सकती है। ये इंसान को कुछ समय के लिए आवाक भी कर सकता है।
- दौड़ते हुए बाघ 60 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार तक जा सकते है, पर वो छोटी दूरी ही भागते है।
- जंगल में एक बाघ की अधिकतम उम्र 12-14 वर्ष होती है।
- बाघ घात लगा कर शिकार करते है।
- बाघ मांसाहारी जीव है और मुख्यतः जंगली सूअर, हिरण एवम् मृग, गौर, शेही, मोर और घरेलू मवेशी भी शिकार कर के खाता है।
- बाघ एक बार में 18-30 किलोग्राम मांस खाते है ।
- बाघों को पानी बहुत पसंद होता है और गर्म दिनों में इन्हे नदी, तालाबों आदि में बैठा देखा जा सकता है।
- बाघ क्षेत्रीय होते है और एक नर बाघ अपने क्षेत्रों में नियमित रूप घूमते है और नियंत्रण में रखते है। इन नर बाघ क्षेत्रों में सामान्यतः 3-4 मादा बाघ के क्षेत्र होते है।
- बाघ अपने क्षेत्रों में नियमित रूप घूमते है और मूत्र, विष्ठा एवम् खरोंच से चिन्हित करते है।